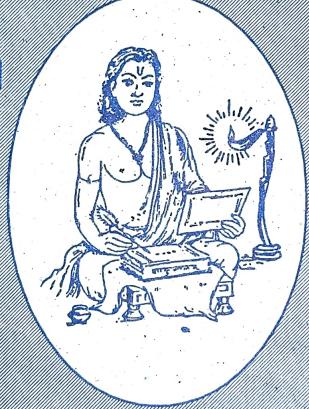


## Kalidasa - Samskrita - Kendram

(An Institution to propagate Sanskrit Language and Literature) 18, Sannathi Street, Madurantakam - 603 306.

Off: C65, 10th Cross Street, Hindu Colony, Nanganallur, Chennai-61. e-mail: vcgrajan@yahoo.com & mrprabakar@yahoo.com Visit our site http://www.geocities.com/vcgrajan/kendram.html

JULY



2006

Why do you not become Sanskrit Scholars? Why do you not spread millions to bring Sanskrit Education. That is the question. That is the secret power of India.

- Swami Vivekananda.

| •   |                                       | ,                                       |             |                    |   |     |
|---|---------------------------------------|---|-------------|--------------------|---|-----|
|   | •                                     |   |             |                    |   |     |
|   |                                       |   |             |                    | 4                                       |     |
|   | •                                     |   |             |                    |   |     |
|   |                                       |   |             |                    |   |     |
|   |                                       |   |             |                    |   |     |
|   |                                       |   |             |                    |   |     |
|   |                                       |   |             |                    |   |     |
|   |                                       |   |             |                    |   |     |
|   |                                       |   |             | y y                |   |     |
|   |                                       |   |             |                    |   |     |
|   | •0                                    |   |             |                    |   |     |
|   | 8                                     |   |             | *                  |   |     |
|   |                                       |   |             |                    |   |     |
|   |                                       |   |             |                    | in the second                           | •   |
|   |                                       | •                                       |             |                    |   |     |
|   |                                       |   | 30 80 8     |                    | · .                                     |     |
| -   |                                       |   | ,           | the second second  |   |     |
|   | • 12                                  |   | • 04        |                    | •                                       |     |
|   | ·                                     |   |             | 1. 4               | 0                                       |     |
|   |                                       |   |             | • • • • •          |   |     |
| •   | ·                                     |   |             |                    |   |     |
|   |                                       |   |             |                    |   |     |
|   |                                       | • *                                     |             |                    |   |     |
| . 9   |                                       | 2 .                                     | F           |                    |   |     |
| *   |                                       | 5) a'                                   |             |                    |   |     |
|   | N* 2                                  |   | ***         |                    |   |     |
|   | 2 2 mg                                |   |             | v v                |   |     |
|   |                                       |   |             |                    | a ** .                                  |     |
|   |                                       |   | 4 40        |                    |   |     |
|   |                                       |   |             |                    | * *                                     |     |
|   |                                       |   |             |                    |   |     |
|   |                                       |   |             |                    | × .                                     | ,   |
|   |                                       |   |             |                    | g -                                     |     |
|   |                                       |   |             |                    |   |     |
|   |                                       |   |             | . "                |   |     |
|   | •                                     |   |             |                    |   |     |
|   |                                       |   |             |                    |   |     |
|   | 3 (2)<br>                             |   |             |                    | 46                                      |     |
| 9   |                                       |   |             |                    |   |     |
|   |                                       |   |             |                    |   |     |
|   |                                       |   |             |                    | • |     |
|   |                                       |   |             |                    |   |     |
| •   |                                       |   |             |                    | ` `                                     |     |
|   |                                       |   |             |                    |   |     |
|   |                                       | Tara Sara                               |             |                    | ,                                       |     |
|   |                                       |   |             |                    |   |     |
|   |                                       |   |             |                    |   |     |
|   |                                       |   |             |                    |   |     |
| *   |                                       |   | • •         |                    |   |     |
|   | •                                     |   |             |                    |   |     |
| •   |                                       | and the second                          |             |                    |   |     |
|   |                                       | 1                                       | W           |                    | ·•                                      |     |
|   |                                       |   |             |                    |   |     |
|   | * 100                                 | 146                                     |             |                    |   |     |
|   |                                       | 2.50                                    |             |                    |   | ٠.  |
| ž   |                                       | • *                                     |             |                    |   |     |
|   |                                       |   |             |                    |   |     |
|   |                                       |   |             | • ,                | 1                                       |     |
|   | , ,                                   |   |             |                    |   |     |
| ×6  | · .                                   |   |             |                    |   |     |
|   |                                       |   |             |                    |   |     |
|   |                                       |   |             | , A <sub>1</sub> , |   |     |
|   |                                       |   |             |                    |   |     |
|   | •                                     |   |             | •                  |   |     |
| er ste                                      |                                       | 0 2                                     |             |                    |   |     |
|   |                                       |   |             |                    | .*                                      |     |
|   |                                       |   | •           |                    |   |     |
| a   | * * * * * * * * * * * * * * * * * * * |   |             |                    |   |     |
|   | • *                                   |   |             |                    |   |     |
|   | ÷ ,                                   | , · · · · · · · · · · · · · · · · · · · |             |                    |   |     |
| 27 - 30 · · · · · · · · · · · · · · · · · · |                                       |   |             |                    |   | . ' |
|   |                                       |   |             |                    |   |     |
|   |                                       |   |             |                    |   |     |
|   |                                       |   | 100         |                    |   |     |
|   |                                       |   | · · · · · · |                    | 8 0                                     | 4.  |
| • •   |                                       |   |             | . * ;              |   |     |
|   |                                       |   | •           |                    |   |     |

# Kalidasa - Samskrita - Kendram

(An Institution to propagate Sanskrit Language and Literature)
18, Sannathi Street, Madurantakam - 603 306.
Off: C65, 10th Cross Street, Hindu Colony, Nanganallur, Chennai-61.

e-mail: vcgrajan@yahoo.com & mrprabakar@hotmail.com Visit our site http://www.geocities.com/vcgrajan/kendram.html

I am glad to inform you that our Kendram has entered in the 17th year of Service. Day by day our service is developing and need more people to involve themselves in this service. The achivements that we have made only by the service of our Staff, Pracharaks and Philanthropists. I bow for their service and help.

Now the number of students and centres are being increased and many come forward to start Sanskrit Study Centres in their area. We are ready extend our cooperation with all materials and waiting for the call from Sanskrit Pracharaks. Now Sanskrit is a favourate subject among the students. This is a good news to the pracharaks and pracharikas. Kendram published many books for the beginners and they are appriciated by many Sanskrit Scholars. I would like to quote the blessings of Swami Omkarananda during the Kalidasa Day at Muscat "I have read both Pushpam I and II and they are well prepared. The lessons are prepared systamatically and I am sure it is very simple for the learners. The Dhatupatam and all Vibhaktis are taught thouroughly through simple exercies." I would like to request our Pracharaks to introduce more number of Sanskrit Scholars and well-wishers to start a centre in their area.

Sanskrit language is taught through internet since 2004. Around 1500 members from all over the world mainly from USA,

Europe, Gulf region and Australia learn Sanskrit through internet. These lessons are used by many Sanskrit Teachers in various countries and forwarded to many yahoogroups. Kindly introduce more number of people to our website. Kindly visit: http://groups.yahoo.com/group/kalidasa/ 40 Sanskrit lessons in two stages are published in the interest and they are stored in the file section of the yahoo group for ready reference.

Sanskrit is taught in Muscat city with the association of Bala Bharathi and Bala Vikas. Nearly 50 students learn Sanskrit and take the exams conducted by our Kendram.

I request all the Pracharaks to organise Sanskrit Divas, Kalidasa Divas, Sanskrit Samaroh, exhibition or any other kind of function or celebration atleast once in a year to generate interest among the people. Kendram will extend the financial support to every Pracharak.

Last year Abhyasa Chandrika was published. It contains 12 kinds of exercies to teach verbs and cases. This book will give enough practice to write short sentences. Sure this book will give enough practice for the beginners.

I would like to thank all the Staff, Pracharaks and Philanthrophists for the help and service the success of Kendram. I request them to continue their support. You may kindly contact me at vcgrajan@yahoo.com vcgrajan@hotmail.com for any help.

I wish the best for the success of Sanskrit Service.

In the service of Sanskrit,

V.C. Govindarajan.

www.geocities.com/vcgrajan/teacher.html

# KALIDASA the head of poets

Kalidasa was not a poet by birth. That was his fortunes to become a poet by the blessings of Goddess Kali. So people called him Kalidasa. We can't trace out his whereabouts but researches say that he lived in Ujjain for long. So the holy City of Maha Kaleswara, the ephithet of Lord Siva, Ujjain is considered as the city of Kalidasa. He had described Ujjain in his Meghadut. The Karthik Poornima is considered as his birthday, may be the day that he was blessed by Goddess Kali. The 5 days celebration is being organised in Ujjain by Kalidasa Academy, Ujjain with the association of Vikram University, Ujjain.

# कालिदासं नमामि

पुरा कवीनां गणना प्रसङ्गे किनष्ठिकाधिष्ठित कालिदासः । अद्यापि तत्तुल्यकवेरभावात् अनामिका सार्थवती बभूव ।।

In the above sloka it is said that Kalidasa was the best among all the poets. He was only considered as best because he was best in similes.

Once there was meeting of all poets and they started listing out the names of poets. Then Kalidasa was counted first with the little finger. They could not find any other poet equivalent to him. So the ring finger is still without the name of a poet. The ring finger is called Anamika in Sanskrit. It means "No name") so the name Anamika is fit for the ring finger.

# समस्यापूर्तिः (completion of poem)

Some Researchers say that Kalidasa was the court poet of King Bhoja Raj of Ujjain. King Bhoja was also a Sanskrit poet. So, often the King use to give the ending of a Sloka and the poet had to complete the poem. This called समस्यापूर्तिः। Thus many poems were composed by Kalidasa. Here we give some of the Samasyapurthi (समस्यापूर्तिः) of Kalidasa, which made Kalidasa and King Bhoja become very close friends.

समस्यापूर्तिः 1: क ख ग घ

Sloka completed by Kalidasa:

का त्वं वाले ? काञ्चनमाला, कस्याः पुत्री ? कनकलतायाः ।

हस्ते किं ते ? तालीपत्रम्, का वा रेखा ? क ख ग घ ।।

Meaning: Kalidasa says that he met a girl on the way and had a conversation with her.

Kalidasa: Who are you girl?

Girl: My name is Kanchanamala.

Kalidasa: Who's daughter are you?

Girl: (I am the daughter) of Kanakalatha.

Kalidasa: What is there in your hand?

Girl: A book made of palm leaves.

Kalidasa: What is written in that?

Girl : The letters <u>क ख ग घ</u>

Thus he completed the poem.

## समस्यापूर्तिः 2: गुलुगुग्गुलु गुग्गुलु

Sloka completed by Kalidasa:

जम्बूफलानि पक्चानि पतन्ति विमले जले ।

कपिकम्पितशाखाभ्यः गुलुगुग्गुलु गुग्गुलु ।।

Meaning: There was jamoon fruit tree bent on a pool and it was full of ripen fruits. A monkey climbed up the tree and shook the branch. So the ripen fruits fall on the water and made noice गुलुगुग्गुलु गुग्गुलु

समस्यापूर्तिः 3: टटं टटं टं टटं टटं टटं टः

Sloka completed by Kalidasa:

राज्याभिषेके मदविह्वलायाः हस्ताच्युतो हेमघटस्तरूण्याः ।

सोपानमाराप्य करोति शब्दम् टटं टटं टटं टटं टटं ।।

Meaning: During the coronation ceremony of a king, the young women were carrying golden pot with full of water. One of the pot fell down and made a sound on the staircase zż zż ż zż zż zż zż zż zż

Example for Kalidasa's similie

झटिति प्रविश गेहे मा बहिः तिष्ठ कान्ते ग्रहणसमयवेला वर्तते शीतरश्मेः । तवमुखमकलंङ्कं वीक्ष्य राहुः प्रमोहात् ग्रसति तव मुखेन्दुं पूर्णचन्द्रं विहाय ।।

From Sringara Tilaka: My dear wife! Please get into the house at once. Because the luner eclipse is going to occur. Instead of catching the moon, Rahu may catch your face.

कालिदासवचः कुत्र व्याख्यातारो वयं क्व च । तदिदं मन्ददीपेन राज्वेश्मप्रकाशनम् ।। वल्लभदेवः ।।

- Vallabha, one of the great commentators of Sanskrit literature writes thus "Where is the figure of speech of Kalidasa and where is our commentaries? Our commentaries are like that to enter into a big palace with a small lamp".

उपमा कालिदासस्य ।। Kalidasa is best for similies.

कालिदासकविता नवं वयो

माहिषं दिधशकरं पयः ।

शारदेन्दुरबला च कोमला

स्वर्गसौख्यमुपभुज्यते नराः । ।

The word of Kalidasa is very young, it is like the curd made from milk of a buffalo mixed with sugar, it is soft, innocent and like the moonlight in the autumn season. While reading his works people experience the happiness of the Heaven.

कालिदासगिरां सारं कालिदासः सरस्वती । चतुर्मुखोऽथवा ब्रह्मा विदुर्नान्ये तु मादृशाः । ।

Only Goddess Saraswathi and the creator understand the meaning of Kalidasa's words and not the poet like me.

पुरा कवीनां गणना प्रसङ्गे कनिष्ठिकधिष्ठित कालिदासः । अद्यापि तत्तुल्यकवेरभावात् अनामिका सार्थवती बभूव । ।

Once while counting the names of poets, the little finger was left for Kalidasa and still today another poet is not found. So the name given to the ring finger "Anamika" means names less became meaningful.

महाकविं कालिदासं वन्दे वाग्देवतागुरूम् । यज्ज्ञाने विञ्वमाभाति दर्पणे प'तिविम्बवत् ।।

I salute the Head of the poets. In his knowledge the whole world is reflected like reflection on the mirror.

काव्येषु नाटकं रम्यम् तत्रापि शकुन्तला । तत्रापि च चतुर्थोङ्कः तत्र श्लोकचतुष्टयम् ।।

Drama is the best among literature, among dramas Sakuntala, in Sakuntala the 4<sup>th</sup> act and in that only 4 slokas. The following four Slokas are best of Kalidasa from Sakuntala:

यास्यत्यद्य शकुन्तलेति हृदयं संस्पृष्टमुक्तण्ठया कण्ठः स्तम्भितबाष्पवृत्तिकलुषिश्चन्ता जडं दर्शनम् । वैक्लव्यं मम तावदीदृशमिदं स्नेहादरण्यीकसः पीड्यन्ते गृहिणः कथं नु तनयाविश्लेषदुःखैनवैः ।।

The very thought that sakuntala will leave us today, is making my heart heavy with grief. My throat is choked due to tears and I have no words to speak. My vision is blurred. If an ascetic like me, who has renounced the world can suffer somuch with the pangs of separation, what would be the plight of a family man, when his daughter leaves his home after wedlock!

पातुं न प्रथमं व्यवस्यति जलं युष्मास्वपीतेषु या नादत्ते पि'यमण्डनापि भवतां स्नेहेन या पल्लवम् । आद्ये वः कुसुमप्रसूतिसमये यस्या भवत्युत्सवः सेयं याति शकुन्तला पितगृहं सर्वेरनुज्ञायताम् ।।

Sakuntala is leaving for her husband's place oh kingdom of vegetation, please bid her adieu! She is the same Sakuntala, who would not quench her thirst before watering you. Though she loves to adorn herself, she will not pluck even a leaf, as she loves you so dearly. The day you blossom and flowers bloom that day, used to be a festive day for her.

शुश्रूपस्व गुरून् कुरू प्रियसखीवृत्तिं सपत्नीजने भर्तुर्विपकृतापि रोषणतया मा स्म प्रतीमं गमः । भूयिष्ठं भव दक्षिणा परिजने भाग्येष्वनुत्सेकिनी यान्त्येवं गृहिणीपदं युवतयो वामाः कुलस्याधयः ।।

Serve your in-laws and elders with devotion. Be very friendly with your co wives/sisters. Do not act against your husband's wishes even if he displeases you. Be very generous with the servants. Do not be proud of your good fortune. Women, who thus follow the righteous path, are extolled, and thosewho act otherwise, bring shame to their families.

अर्थो हि कन्या परकीय एव तामद्यसंप्रेष्य परिग्रहीतुः । जातो ममायं विशवः प्रकामं प्रत्यर्पितन्यास इवान्तरात्मा । ।

The daughter is essentially a loan, a precious jewel. She belongs to the family where she gets wedded. I feel greatly relieved having performed the duty of a custodian and have handed her over to her husband.

The above four slokas are the best of Kalidasa.

No composition of Kalidasa displays more the richness of his poetical genius, the exuberance of his imagination, the warmth and play of his fancy, his profound knowledge of the human heart, his delicate appreciation of its most refined and tender emotions, his familiarity with the workings and counterworkings of its conflicting feeling in the short, more entitle him to rank as the Shakespeare of India.

# ANNUAL REPORT 2004-05

Kalidasa-Samskrita-Kendram was started in the year 1990. The purpose of the institute is to serve the Divine language Sanskrit. Sanskrit is the Heritate of India. We cannot think Sanskrit and Heritage of India are two and different. Linguistic Scholars from Westeren world understood the greatness of Sanskrit, started teaching Sanskrit in their respective countries. Sanskrit literature is the main subject in the research courses. They learn Sanskrit with great difficulties and try their best to bringout the greatness of Sanskrit. We should also come forward to learn Sanskrit without any expectation and try to maintain the Guruparampara. In the present decade the number of Sanskrit experts is reduced. This situation should not continue. Everyone should think positive and should come forward to learn this great language.

#### **Literary Activities:**

Kendram has organised many fucntions and celebrations to create interest among the public. Kendram is conducting 6 months Sanskrit Courses as follow:

| Sanskrit Certificate Course | Part One | 6 months |  |
|-----------------------------|----------|----------|--|
|                             | Part Two | 6 months |  |
| Diploma in Sanskrit         | Part One | 6 months |  |
|                             | Part Two | 6 months |  |
| Post Diploma in Sanskrit    | Part One | 6 months |  |
|                             | Part Two | 6 months |  |

I request the Head of Institutions, Sanskrit Scholars and Teachers to come forward to conduct these courses in your institution. These courses are conducted in more that 20 centres such as Chennai, Kanchi, Chengulpet, Hosur, Krishnagiri, Madurantakam, Cheyyar, Selam, Ulundurpet, Srirangam, Paramakudi and other places.

#### Sanskrit lessons through Internet:

Kendram is teaching Sanskrit through internet since 2004. Around 1200 members from various countries became member in the yahoo group "KALIDASA" to learn sanskrit. 30 lessons are published so far. We request everyone to introduce their friends and relatives to the group. Kindly visit:

> http://groups.yahoo.com/group/kalidasa/ (or) www.geocities.com/vcgrajan/kendram.html

#### Veda Vyasa Jayanthi At Srirangam:

Sri Veda Vyasa Jayanthi was organised on Saturday, 10th july 2004 at Sri Yoga Kalyana Mahal, Ammandapam road, Sri Rangam, Trichy. The function was started at the proposed time of 5 P.M. It was graced by Dr.R.Tiru Narayanan, HOD, Sanskrit Dept. St.Joseph's College, Trichy along with Dr.V.M.Anantha Narayanan, HOD, Sanskrit Dept. National . College, Trichy and Sri. Yamunachari and Sri. Madhava chariar, Lectures, Srimath Andavan Ashram Sanskrit College, Sri Rangam. The function was started with Vaidika Prarthana followed by welcome address by Kum.G.K.Chandrika. The year book July 2004 was released followed by the Speech of Dr.R.Tiru Narayanan and Dr.V.M.Anantha Narayanan. They both spoke on the greatness of Sanskrit and Veda Vyasa.

Sri.Yamunachari and Sri.Madhavachariar also spoke on the greatness of Veda Vyasa. Many Sanskrit Scholars, Pracharaks and students from various schools and colleges attended the function. The Pracharaks are honoured with Shawals. Sanskrit students had performed a varities of Sanskrit cultural programme.

#### Kalidasa Day Celebration:

Kalidasa Day Celebration was held on Friday 10th December, 2004 at Sri Krishna Temple Hall, Darsait between 4.00 pm to 5.30 pm. Swami Omkarananda, deciple of Swami Chitbhavananda, who is a great Vedic and Vedanta Scholar was the Chief Guest and addressed the audiance. Swamiji is a renowned scholar in Vedanta. Swamiji spoke the greatness of Sanskrit and Kalidasa. Swamiji spoke on the description of Shiva and Parvathi, Shiva's penance and their marriage from Raghuvamsa, scenes from Sakuntala, life history of Kalidasa and Swamiji's personal experience in Ujjain in the temple Maha Kali. The function was started with Vedic chanting by Sri. Vaidyanathan (Guruji) and his studetns. Sri. Govindarajan welcome Swamiji and the audiance. Sri. Yoganand compiled the programme. The function was completed with Gurudakshina

#### The Philanthropists:

I would like convey my pranams to all the well-wishers who help all the time for the development of our service. I would like to thank Sri. Vaidyanathan (Guruji), Sri. Manikantan, Sri.Srinivasan, Sri.Mohan and their friends. I would like to thank Sri.Goplaswamy, Sri.Tulsiji, Sri.Veeraraghavan, Sri.Venkatesh, Ku.G.K.Chandrika, and all my friends for their continous support.

# ANNUAL REPORT 2005-06

Kalidasa-Samskrita-Kendram was started in the year 1990. The purpose of the institute is to serve the Divine language Sanskrit. Sanskrit is now becoming the world language. The scholars in various languages understood the greatness of Sanskrit and it's literature, come forward to learn this language. Many University students from Australia and USA has created their own websites to teach about Sanskrit. We should also come forward to learn and teach Sanskrit without any expectation. Sanskrit is our language. First we should learn this without any hesitation. Sanskrit is mother of Indian languages. Service to Sanskrit is equivalent to serve their own mother and motherland. It is a service to our culture and heritate.

Kalidasa-Samskrita-Kendram organise many awareness programme, Samaroh, festivals and exhibitions to propogate Sanskrit language and Literature among the public. Kendram is publishing Sanskrit books for the beginners.

#### **Literary Activities:**

Sanskrit Exams are being conducted as usual and many students take part in it. Many new centres are opened and many have come forward to start new centres. I request them to start the centre at their earliest and give report to us. Mark sheets and Certificates were awarded for the successful candidates in these exams.

#### Publication:

Abhyasa Chandrika was published in the month of July 2005. There about 12 varities of exercises in this book to teach Verbs and Cases in simple methods. Students are given enough exercise to compose Sanskrit sentences in simple language. This book was sponsered by the Sanskrit students of Bala Vikas.

#### Sanskrit in Website:

Sanskrit is taught through internet since 2004. Two stages of Sanskrit lessons are completed so far. Third stage will start shortly. Present and future tenses and seven cases are taught in simple way. Day by day the number of students is increasing to learn this great language.

#### **Conclution:**

I would like to thank all the well-wishers and Sanskrit Scholars those who help us time to time. I request Sanskrit scholars to come forward to open Sanskrit centres. I would like to thank Sri. Vaidyanathan (Guruji), Sri. Srinivasan, Sri. Manikantan, Sri. Yoganand, Sri. Prasad, Sri. Mohan and their friends for their continues support. Also I would like to thank Sri. Veeraraghavan, Sri. Venkatesh, Sri. Gopalaswamy, Sri. Tulsiji, Sri. Sriram, Sri. Gowrisankar and all my friends for their support.



#### KALIDASA DAY

Kalidasa Day Celebration was held on Friday 10th December, 2004 at Sri Krishna Temple Hall, Darsait between 4.00 pm to 5.30 pm. Swami Omkarananda, deciple of Swami Chitbhavananda, who is a great Vedic and Vedanta Scholar was the

Chief Guest and addressed the audiance. Swamiji is a renowned scholar in Vedanta. Swamiji spoke the greatness of Sanskrit and Kalidasa. The packed audience were attracted by the voice of Swamiji and way of chanting the mantras and slokas. Swamiji spoke the on description of Shiva and Parvathi, Shiva's penance and their marriage from Raghuvamsa, scenes from Sakuntala, life history of Swamiji's Kalidasa and personal experience in Ujjain in the temple Maha Kali. Swamiji highlighted the

incident from the life history of Kalidasa and Dandin. Always there was difference of opinion between Kalidasa and other scholars. Once Lord Siva and Parvathi disguised as an ordinary couple and waiting in front the royal gate with a dead body. They showed a small piece of palm leaf in which 3 lines were written to all the poets. Lord informed all the poets that if the poem is completed the dead person will get his life. All the scholars could not complete the slokas whereas Dandin completed the poem. But the dead body did not turn

Lord showed the slokas and he completed with the same lines that Dandin had written. Now also the dead body did not come to life. Now Kalidasa looked and said "When this dead body is not turned to life, this is not a dead body". Then Lord appeared and said "Yes. This is not a dead body". Thus Swamiji explained the confidence of Kalidasa on his writings. Kalidasa is the poet of all time. His writings are suitable for all. The function was started with Vedic chanting by Sri. Vaidyanathan (Guruji) and his studetns. Sri. Govindarajan welcome Swamiji and the audiance. Sri. Yoganand compiled the programme. The function was completed with Gurudakshina.

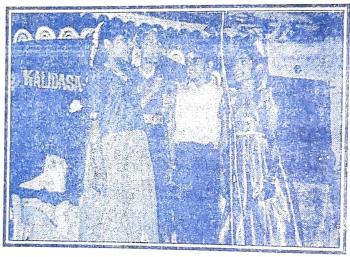


Sri.V.C. Govindarajan welcome Swamiji during the Kalidasa Day Celebration



Vaidika Prarthana during the Veda Vyasa Jayanthi at Srirangam

Cultural Programme
by Sanskrit Students
durng Veda Vyasa
Jayanthi at
Srirangam





Swami
Omkarananda
delivering speech
during Kalidasa
Day, Muscat.



# ABHIJNANAM (a bi-lingual magazine on Sanskrit)

soon to your hands. Coming

Translation of Sanskrit works.

Research articles.

News from various places.

Kendram news.

Short stories in Sanskrit.

Question & Answer.

contants....

Interview with a Sanskrit Scholar.

Stories on modern syllubus from Skt. Lit.

Let us learn some grammar points.

Full coverage of Sanskrit programme.

Studetns pages.

Sanskrit puzzles & Quiz. and other useful entertaining & enlightening items.

Book-Post

Kalidasa-Samskrita-Kendram,

C65, 10th Cross Street, Hindu Colony,

Nanganallur, Chennai 600061